

अभिप्रेरणा (Motivation)

अभिप्रेरणा के अंग्रेजी शब्द **Motivation** की उत्पत्ति लैटिन भाषा की **Motum** धातु से हुई है। जिसका अर्थ है :- TO MOVE और Motion अर्थात् गति करना।

मनोवैज्ञानिक अर्थ में "अभिप्रेरणा" से हमारा अभिप्राय केवल आंतरिक उत्तेजनाओं से होता है जिन पर हमारा व्यवहार आधारित होता है। इसमें बाह्य उत्तेजनाओं को कोई महत्व नहीं दिया जाता। यह रुचि को पैदा करने, बनाये रखने और नियंत्रित करने की प्रक्रिया है।

परिभाषाएँ :-

स्किनर	"अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोत्कृष्ट राजमार्ग है।" "स्कूल अधिगम में प्रेरणा में वांछनीय व्यवहार को उत्तेजित करना, स्थायित्व करना, जारी रखना, नियमित करना व निर्देशित करना शामिल है।"
गुड	"क्रिया को उत्तेजित करने, जारी रखने और नियंत्रित करने की प्रक्रिया को अभिप्रेरणा कहते हैं।"
वुडवर्थ	"अभिप्रेरणा वह तात्कालिक बल है जो व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है।" "प्रेरणा व्यक्ति की वह दिशा है जो उसे निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये निश्चित व्यवहार करने के लिये उत्तेजित करती है।"
गिलफोर्ड	"प्रेरणा को विशेष कारक या दशा है जो किसी क्रिया को आरंभ करने व बनाये रखने के लिए प्रवृत्त करती है।" "अभिप्रेरक से तात्पर्य उस विशेष आंतरिक कारक या दशा से है जो व्यवहार को उत्पन्न करने तथा उसे किसी प्रकार से व्यवहार करने को तत्पर करती है।" अर्थात् प्रेरक $(M = N + D + I)$
क्रो एण्ड क्रो	"अभिप्रेरणा का संबंध सीखने में रुचि उत्पन्न करने से है इसी रूप में वह सीखने का आधार है।"
गेट्स व अन्य	"अभिप्रेरण प्राणी की वे शारीरिक व मनोवैज्ञानिक आभ्यंतरिक दशाएं हैं जो उसे विशेष प्रकार की क्रिया करने के लिए प्रेरित करती हैं।"
ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन	"प्रेरणा एक प्रक्रिया है, जिसमें सीखने वाले की आंतरिक शक्तियां या आवश्यकताये उसके वातावरण में विभिन्न लक्ष्यों की ओर इंगित करती हैं।"
मैकडूगल	प्रेरक शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशाये हैं जो किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करती हैं।

अभिप्रेरणा के प्रकार

सकारात्मक / आंतरिक / स्वाभाविक अभिप्रेरणा
(स्वयं की इच्छा से यदि कोई कार्य किया जाए)

जैसे – आवश्यकताएँ, अंतर्नोद,
मूल प्रवृत्तियाँ, प्रोत्साहन

नकारात्मक / बाह्य अभिप्रेरणा
(किसी दूसरे की इच्छा या प्रभाव से
कार्य करना, स्वयं की इच्छा से नहीं।)

जैसे—प्रशंसा, निंदा, पुरस्कार, प्रतिद्वंद्विता
(मस्तिष्क से शरीर की ओर चलती हैं)

अभिप्रेरणा के तत्व

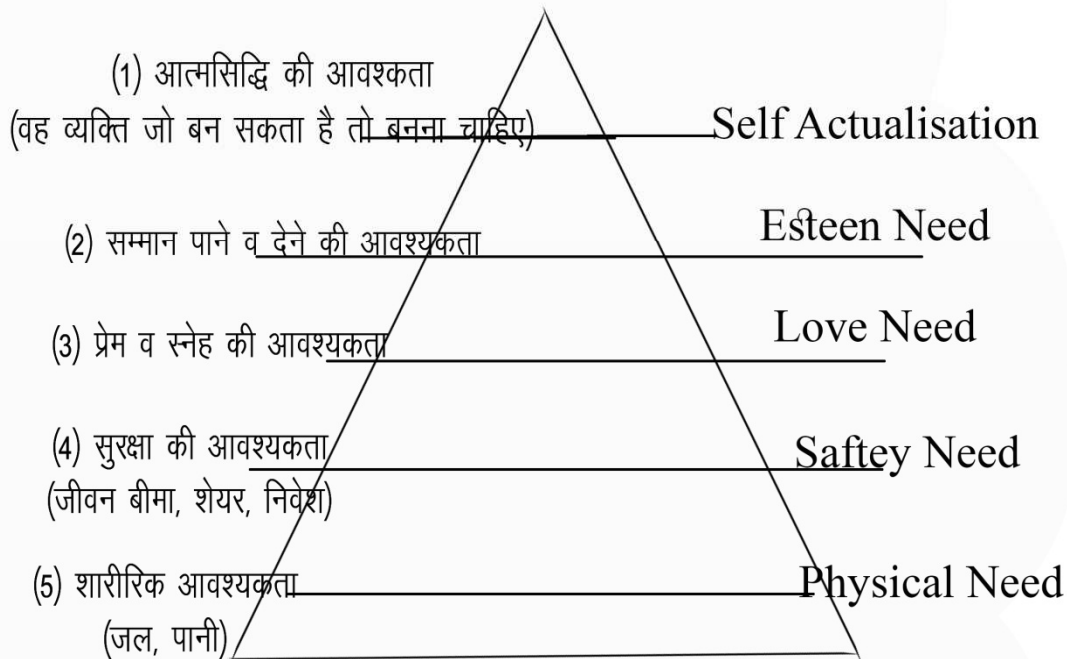
1. **आवश्यकता (NEED)** :-शरीर में किसी चीज की कमी या अति की अवस्था आवश्यकता कहलाती है।

आवश्यकता :- भोजन, पानी, काम, नींद, मलमूत्र त्याग।

चक्रीय आवश्यकता :- भोजन, पानी, काम।

सबसे कम जरूरी आवश्यकता :- काम। नोट :- आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत का अब्राहम मैस्लों ने 1954 में दिया।

आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत :-



2. चालक / प्रणोद / अंतर्नोद (Drive) :- चालक शरीर की आंतरिक क्रिया दशा है जो विशेष प्रकार का व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। जैसे – प्यास, भूख।

3. उद्दीपन / प्रोत्साहन (Incentive) :- जिस तत्व द्वारा चालक की संतुष्टि होती है उसे उद्दीपन या प्रोत्साहन कहा जाता है। प्रोत्साहन / उद्दीपक दो प्रकार के होते हैं :-

1. सकारात्मक :- प्रशंसा, पुरस्कार इत्यादि।

2. नकारात्मक :- दुःख, दण्ड इत्यादि।

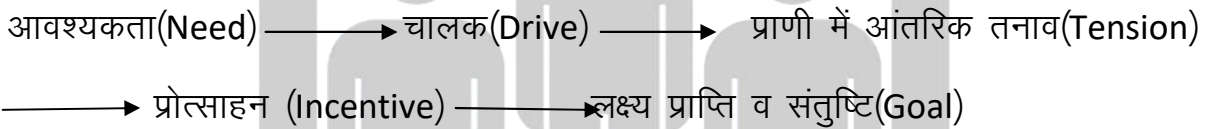
जैसे :- भूख चालक के लिए भोजन उद्दीपन / प्रोत्साहन होगा।

4. प्रेरक (Motive) :- उपरोक्त तीनों का योग ही प्रेरक है।

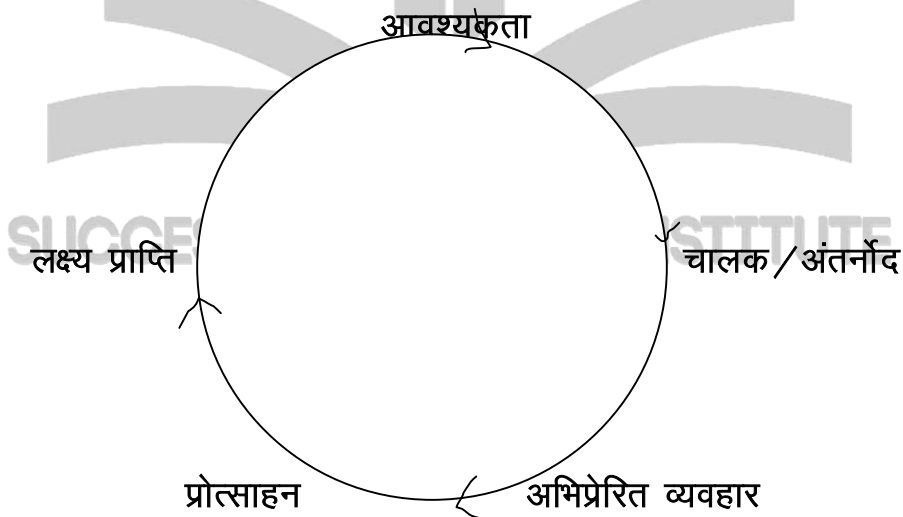
$$(M = N + D + I) \text{ प्रतिपादक - बुद्धवर्थ}$$

नोट :- अभिप्रेरणा के चरण तीन होते हैं। (1. आवश्यकता 2. चालक / प्रणोद 3. उद्दीपक / प्रोत्साहन)

➤ आवश्यकता चालक व उद्दीपन का संबंध :-



➤ अभिप्रेरणात्मक चक्र (Motivation Cycle) :- आवश्यकता से लेकर लक्ष्य प्राप्ति तक अभिप्रेरणा के सभी चरणों के चक्रीय चक्र को अभिप्रेरणात्मक चक्र कहते हैं।



जब प्राणी के शरीर में किसी चीज की कमी या अति की अवस्था उत्पन्न हो जाती है तो इसे हम आवश्यकता कहते हैं। आवश्यकता अंतर्नोद को जन्म देती है, जिससे तनाव उत्पन्न होता है। तनाव प्राणी में क्रिया-शीलता को बढ़ाता है। क्रिया-शीलता बढ़ने से

उद्दीपन की प्राप्ति संभावनाएँ बढ जाती है। उद्दीपन की प्राप्ति के पश्चात तनाव में कमी आ जाती है।

जैसे :- किसी व्यक्ति के शरीर में पानी की कमी हुई तो प्यास अंतर्नोद/चालक का जन्म होगा। वह व्यक्ति पानी प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है और पानी प्राप्त होने पर उसके तनाव में कमी आ जाती है।

अभिप्रेरणात्मक चक्र दो प्रकार होते है :-

1. **चक्रीय अभिप्रेरणात्मक चक्र** :- ऐसा अभिप्रेरणात्मक चक्र जो स्वयं स्वतः स्वाभाविक रूप से जारी रहता है। चक्रीय अभिप्रेरणात्मक कहलाता है। जैसे - भूख, प्यास, नींद, काम आदि का चक्र।

2. **संज्ञानात्मक अभिप्रेरणात्मक चक्र** :- ऐसा अभिप्रेरणात्मक चक्र जो स्वतः जारी नहीं रहती है बल्कि संज्ञान के द्वारा चलाया जाता है। संज्ञानात्मक अभिप्रेरणात्मक चक्र कहलाता है। जैसे - उपलब्धि, सत्ता, अनुमोदन आदि का चक्र।

➤ इस चक्र में कुल 4 चरण होते है।

आवश्यकता — चालक — लक्ष्य — संज्ञान

➤ **अभिप्रेरणा** :- आवश्यकता से लेकर लक्ष्य प्राप्ति तक अभिप्रेरणा के तीनों चरणों के एकीकृत रूप को अभिप्रेरणा कहते है।

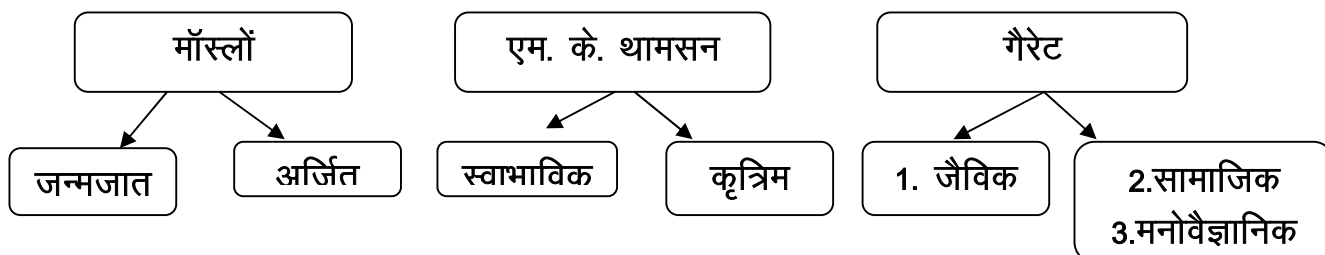
आवश्यकता — चालक — लक्ष्य — अभिप्रेरणा

अभिप्रेरकों के प्रकार (Types of Motives)

1. **जैव अभिप्रेरक** :- ये अभिप्रेरणा के सहज (अंतर्जात), जैविक कारकों जैसे - हार्मोन, तंत्रिका-संचारक, मस्तिष्क संरचना(अधश्चेतक) इत्यादि पर फोकस करते है। उदाहरण - भूख, प्यास, नींद तथा काम अभिप्रेरक।

2. **मनोसामाजिक अभिप्रेरक** :- ये अभिप्रेरणा के मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक(तथा पर्यावरणीय) कारकों तथा उनकी परस्पर अंतर्क्रिया पर फोकस करते है। जिससे अभिप्रेरणा उत्पन्न करती है। जैसे - उपलब्धि, संबंधन, शक्ति, जिज्ञासा तथा अन्वेषण और आत्म-सिद्धि अभिप्रेरक की आवश्यकताएँ।

अभिप्रेरकों का वर्गीकरण (Classification of Motives)



प्रेरकों का वर्गीकरण अनेक विद्वानों के द्वारा किया गया है, जिनमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण है :-

1. **जन्मजात प्रेरक (Innate Motives):-** ये प्रेरक, व्यक्ति में जन्म से ही पाये जाते हैं। इनको जैविक या शारीरिक प्रेरक (Physiological Motives) भी कहते हैं। जैसे – भूख, प्यास, काम, निद्रा, विश्राम आदि।
2. **अर्जित प्रेरक (Acquired Motives):-** ये प्रेरक अर्जित किये या सीखे जाते हैं। जैसे – रुचि, आदत, सामुदायिकता आदि।
3. **मनोवैज्ञानिक प्रेरक (Psychological Motives):-** ये प्रेरक प्रबल मनोवैज्ञानिक दशाओं के कारण उत्पन्न होते हैं। गैरेट ने इनके अंतर्गत संवेगों के स्थान दिया है। जैसे – क्रोध, भय, प्रेम, दुःख, आनंद आदि।
4. **सामाजिक प्रेरक (Social Motives):-** ये प्रेरक सामाजिक आदर्शों, स्थितियों, संबंधों आदि के कारण उत्पन्न होते हैं और व्यक्ति के व्यवहार पर बहुत प्रभाव डालते हैं। जैसे – आत्म-सुरक्षा, आत्म-प्रदर्शन, जिज्ञासा, रचनात्मकता, अनुमोदन अभिप्रेरक (Approval Motivation), संबंधन अभिप्रेरक (Affiliation Motivation), उपलब्धि अभिप्रेरणा (Achievement Motivation), शक्ति अभिप्रेरणा (Power Motivation), आक्रामकता अभिप्रेरक (Aggressiveness Motive), सामूहिकता (Gregariousness), संग्रहशीलता (Acquisitiveness), आत्म-स्थापन (Self Assertion) युयुत्सा (Pugnacity) आदि।
5. **स्वाभाविक प्रेरक (Natural Motives):-** ये प्रेरक, व्यक्ति में स्वभाव से ही पाये जाते हैं। जैसे – खेल, अनुकरण, सुझाव, प्रतिष्ठा, सुख-प्राप्ति आदि।
6. **कृत्रिम प्रेरक (Artificial Motives) :-** ये प्रेरक स्वाभाविक प्रेरकों के पूरक के रूप में कार्य करते हैं और व्यक्ति के कार्य या व्यवहार को नियंत्रित और प्रोत्साहित करते हैं। जैसे – दण्ड, प्रशंसा, पुरुस्कार, सहयोग, व्यक्तिगत और सामूहिक कार्य की प्रेरणा आदि।
7. **व्यक्तिगत अभिप्रेरणाएँ (Personal Motives):-** व्यक्तिगत अभिप्रेरणाएँ वे हैं, जिन्हें व्यक्ति अपने वैयक्तिक अनुभवों के आधार पर सीखता है। वैयक्तिक अनुभवों के कारण इन अभिप्रेरकों में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। यह देखा गया है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई व्यक्तिगत अभिप्रेरणा अवश्य पाई जाती है। उपलब्धि अभिप्रेरणा यद्यपि सामाजिक अभिप्रेरणा है परंतु इसकी अभिव्यक्ति का आधार वैयक्तिक है। कुछ प्रमुख वैयक्तिक अभिप्रेरणाओं का जीवन लक्ष्य (Life Goal), आकांक्षा-स्तर (Level of Aspiration), अचेतन अभिप्रेरणाएँ (Unconscious Motives)।

अभिप्रेरणा के सिद्धांत (Theories of Motivation)

1. उद्दीपन-अनुक्रिया सिद्धांत (Stimulus-Response Theory):-

प्रवर्तक – थार्नडाइक, हल, मिलर, स्किनर ।

- इस सिद्धांत को वातावरणीय सिद्धांत भी कहकर सम्बोधित किया जाता है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन व्यवहारवादियों द्वारा किया गया। व्यवहारवादियों का मानना है कि प्राणी का समस्त व्यवहार किसी न किसी उद्दीपन का परिणाम होता है।

2. शरीर-क्रिया सिद्धांत (Physiological Theory):- शरीर-क्रिया सिद्धांत के प्रतिपादक मार्गन है। इनका मानना है कि समस्त व्यवहार व क्रियाओं का आधार केन्द्रीय प्रेरक स्थिति(Central Motive State) होती है। प्राणी की क्रियायें किसी बाह्य उद्दीपन पर निर्भर न रहकर शरीर-संरचना प्रेरक स्थिति बनती है। शरीर में स्नायु तंत्र, रक्त संचार, अंतःस्त्रावी ग्रंथियां आदि शारीरिक तंत्रों में परिवर्तन होते रहते हैं। जिसके प्रभाव स्वरूप प्रणाली या व्यक्ति क्रियाएं करता है।

3. मूल प्रवृत्ति का सिद्धांत (Instinct Theory):- इस सिद्धांत का प्रतिपादन इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मैकडूगल ने 1908 में किया।

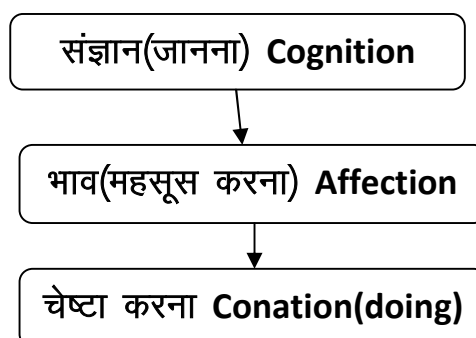
मानव व्यवहार को स्पष्ट करने के लिए मूल प्रवृत्ति का सर्वप्रथम प्रयोग विलियम जेम्स ने किया था। परंतु एक पूर्ण सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय मैकडूगल को प्राप्त है।

इनके अनुसार मानव मस्तिष्क में कुछ जन्मजात प्रवृत्तियां होती हैं जो उसके सभी विचारों एवं क्रियाओं के लिए प्रेरक शक्ति का कार्य करती हैं।

इनके अनुसार मूल प्रवृत्तियां उछाल पटों (Spring Board)का कार्य करती हैं। इन्होंने मूल प्रवृत्ति को जन्मजात मनो-शारीरिक उपद्रव (Psycho psysical disposition) के रूप में परिभाषित किया।

इन्होंने 14 मूल प्रवृत्तियों की एक सूची प्रस्तुत की। प्रत्येक मूल प्रवृत्ति किसी एक सांवेगिक स्थिति (Emotional Disposition) या भावात्मक अनुभव से जुड़ी होती है।

मानव व्यवहार निम्नलिखित तीन पक्षों का अनुसरण करके किए जाते हैं :-



जैसे – भयानक पशु को देखना—-----डर का अनुभव होना—-----भागना(बचने के लिए) उपर्युक्त तीनों सोपानों का परिणाम है। मैक्डूगल के अनुसार 14 मूल प्रवृत्तियां निम्नलिखित हैं, प्रत्येक मूल प्रवृत्ति किसी न किसी संवेग से जुड़ी होती है :-

क्र.स.	मूल प्रवृत्ति	संवेग
1	पलायन (Escape)	भय (Fear)
2	युयुत्सा (Combat)	क्रोध (Anger)
3	निवृत्ति (Repulsion)	घृणा (Disgust)
4	संतान कामना (Parental)	वात्सल्य (Tender ness)
5	शरणागति (Appeal)	विषाद/करुणा (Distress)
6	कामवृत्ति (Sex)	कामुकता (Lust)
7	जिज्ञासा(Curiosity)	आश्चर्य (Wonder)
8	दैन्य (Submission)	आत्महीनता(Negative Self Feeling)
9	गौरव (Assertion)	आत्मभिज्ञान (Positive feeling)
10	सामूहिकता (Gregariousness)	एकाकीपन (Loneliness)
11	भोजनान्वेषण (Food Seeking)	भूख (Hunger)
12	संग्रहण (Aquisition)	स्वामित्व(Ownership)
13	रचनात्मकता(Construction)	कृतिभाव(Creation)
14	ह्यस्य (Laughter)	आमोद(Amusement)

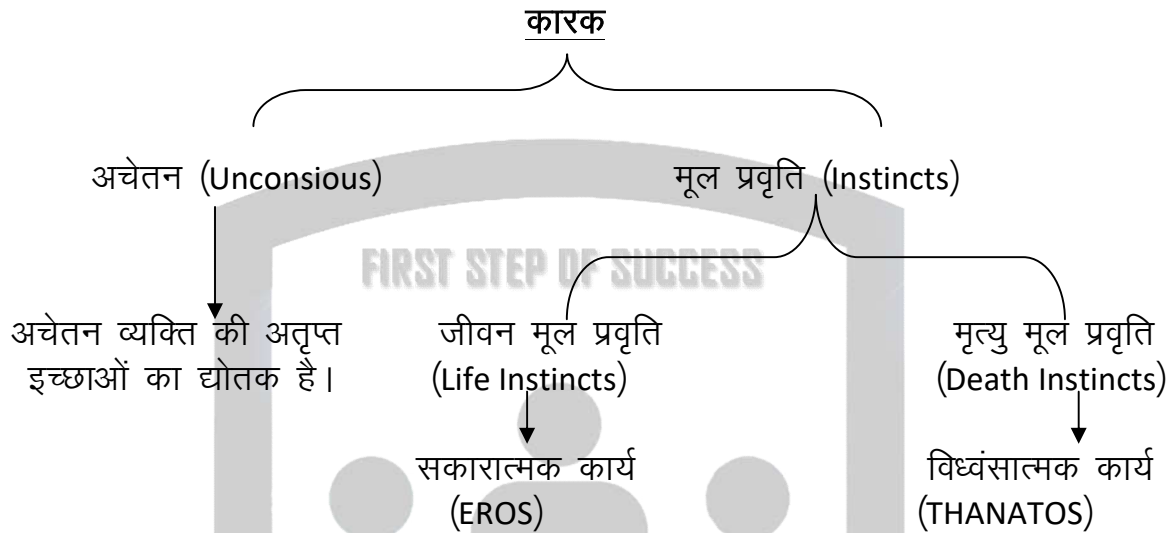
सिद्धांत की आलोचना :-

1. सभी व्यवहारों को मूल प्रवृत्त्यात्मक मानने की विचार धारा का व्यवहारवादियों ने विरोध किया।
2. 1924 तक लगभग 14000 मूल प्रवृत्तियों की चर्चा की जाने लगी। जो अपने आप में समस्या उत्पन्न करने वाली थी।

उपरोक्त आलोचनाओं के बावजूद भी यह मानव व्यवहार को स्पष्ट करने वाला एक महत्वपूर्ण सिद्धांत माना जाता है।

4. **मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत (Psychoanalytic Theory):-** मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत का प्रतिपादन वियना के सिगमण्ड फ्रायड ने मानवीय अभिप्रेरणा को विश्लेषित करने हेतु किया था। इस सिद्धांत के प्रबल अनुयायियों में युंग(Yung) तथा एडलर (Adler) के नाम मुख्य रूप से लिए जाते हैं। जिन्होंने इस सिद्धांत के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दिया था। इस सिद्धांत के अनुयायियों का मानना है कि मनुष्य के व्यवहार को संचालित करने में उसके अचेतन मन का गहरा प्रभाव पड़ता है। बालक अपने विकास के क्रम में बहुत-सी इच्छायें, भावनायें तथा विशेष रूप से यौन संबंधी आवश्यकताओं को सामाजिक मर्यादाओं के कारण पूरा नहीं कर पाता जिसके फलस्वरूप अप्रिय बातों तथा आवश्यकताओं का दमन करके उन्हें अपने चेतन मन से निकाल देता है जो उसके अचेतन मन में एकत्रित होती रहती है। इस सिद्धांत के अनुसार अचेतन मन में एकत्रित हुई दमित आवश्यकताओं चेतन

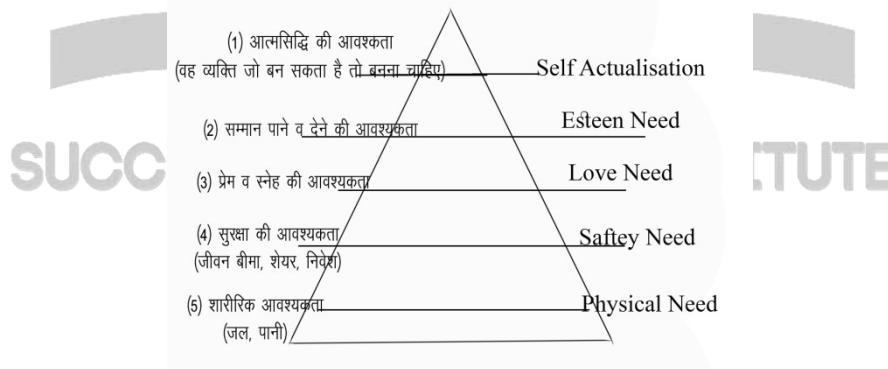
मन में आये बिना ही मानवीय व्यवहार को प्रभावित करती है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि उतेजना के मिलते ही वे दमित इच्छायें फिर से चेतन में आने का प्रयास करती है। इस विचारधारा के अनुयायियों का मानना है कि मानवीय व्यवहार ऐसे अभिप्रेरकों से प्रभावित होता है। जिसके विषय में वह पूर्ण रूप से अनभिज्ञ होता है।



नोट :- सिग्मण्ड फ्रायड के अनुसार मूल प्रवृत्तियां दो प्रकार –जीवन व मृत्यु।

5. मास्लों का स्व-यथार्थीकरण सिद्धांत :- इस सिद्धांत के अनुसार जब व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए किसी वस्तु की कमी या आवश्यकता महसूस करता है तो उसे प्राप्त करने के लिए क्रियाशील या अभिप्रेरित हो जाता है।

आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत :-



मैस्लों ने शारीरिक, सुरक्षा एवं प्रेम व स्नेह की आवश्यकता को निम्नस्तर की आवश्यकता जबकि अंतिम दो सम्मान पाने व देने की आवश्यकता और आत्म सिद्धि आवश्यकता को उच्च स्तर की आवश्यकता माना है।

6. **अभिप्रेरणा का प्रणोद-न्यूनता सिद्धांत (Drive Reduction Theory of Motivation):**—इस सिद्धांत का प्रतिपादन 1943 ई. में **क्लार्क लियोनार्ड हल** ने किया। इन्होंने जैविकीय प्रणोदों भूख, प्यास, नींद, काम पर अधिक बल दिया। इन प्रणोदों/चालकों के कारण व्यक्ति चिंतित एवं तनाव ग्रस्त हो जाता है। ये चालक/प्रणोद आंतरिक तनाव उत्पन्न करते हैं।

इन प्रणोदों/चालकों को न्यून करने के लिए व्यक्ति ऊर्जा को केन्द्रित करने का प्रयास करता है।

जैविकीय भागों के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक भागों या प्रणोदों को भी इसमें शामिल किया गया किंतु उच्च संज्ञानात्मक स्तर के मानव व्यवहार को स्पष्ट करने में असफल रहने के कारण इसका महत्व धीरे-धीरे कम हो गया।

7. **मूरे का अभिप्रेरणा का सिद्धांत** :- मूरे के अनुसार असंतुष्ट आवश्यकता प्राणी को कार्य करने के लिए उत्प्रेरित करती है और तब तक क्रियाशील रहती है जब तक आवश्यकता संतुष्ट नहीं होती। प्रत्येक आवश्यकता एक विशेष प्रकार के संदेश से संबंधित होती है। यह संवेग एक विशेष प्रकार के बाह्य व्यवहार या कल्पना को जन्म देती है जो पूर्व परिस्थितियों को इस प्रकार बदलती है कि अंत में प्राणी तनाव दूर करने के लिए क्रियाशील नहीं होता बल्कि वह तनाव को और बढ़ाने के लिए क्रियाशील होता है जिससे तनाव अंत में घट जाता है। उनका मानना है कि तनाव रहित दशा संतोषजनक नहीं होती परंतु तनाव दूर करने से प्रक्रिया संतोषपूर्ण होती है।

8. **निष्पत्ति प्रेरणा सिद्धांत (Achievement Motivation Theory):**—निष्पत्ति अभिप्रेरणा के सिद्धांत का प्रतिपादन **मैक्लेलैण्ड 1951** तथा उनके सहयोगियों ने किया था। मानव प्राणी की निष्पत्ति अभिप्रेरकों की शक्ति में एक-दूसरे से भिन्न होती है तथा यही अंतर राष्ट्रों के आर्थिक विकास के अंतर को समझने में महत्वपूर्ण है। अभिप्रेरणा के लिए वातावरण का संकेत याददाश्त तथा भावना संबंधी ज्ञान होना महत्वपूर्ण तत्व है। निष्पत्ति अभिप्रेरणा तब क्रियाशील बनती है जब व्यक्ति को यह ज्ञात हो कि किस मानक के आधार पर उसके कार्य का मूल्यांकन होगा और परिणात्मक मूल्यांकन सफलताजनक या असफलताजनक होगा।

माता-पिता की उम्मीद और निर्देशन बच्चे के जीवन में उच्च निष्पत्ति की आवश्यकता विकसित करते हैं। समाज तथा सामाजिक दर्शन भी निष्पत्ति अभिप्रेरकों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

9. **अभिप्रेरणा का आंतरिक सिद्धांत** :-अभिप्रेरणा के आंतरिक सिद्धांत को **हैरो** तथा उनके सहयोगियों ने 1956 में प्रतिपादित किया था। हैरो ने आंतरिक अभिप्रेरणा की महत्ता प्रदर्शित करने के लिए बंदरों पर विभिन्न प्रयोग किए। उन्होंने पाया कि बंदरों ने समस्या का समाधान बिना किसी बाह्य पुरस्कार के किया। उसने बताया कि बाह्य पुरस्कार प्रदान

करने से बंदरों के अधिगम में कमी आई। बंदरों और छोटे बच्चों पर विभिन्न प्रकार के प्रयोग किए जो आंतरिक अभिप्रेरणा के पक्ष में हैं। हैरो ने पाया कि वातावरण की नवीनता ही अभिप्रेरणा का कार्य करती है। उत्सुकता, संभावनाओं को खोजने तथा दशाओं को अपने अनुकूल बनाने संबंधी व्यवहार आंतरिक प्रेरक के रूप में व्यवहार को जन्म देती है।

10. अभिप्रेरणा का संज्ञानवादी व्यवहार सिद्धांत का प्रतिपादन – लेविन न्यूकाम्ब एवं वर्दीमर

- कक्षा परिस्थितियों में अभिप्रेरित करने के उपाय :-
 1. बाल-केन्द्रीय दृष्टिकोण (Child Centred Approach)
 2. नये ज्ञान को पूर्व ज्ञान से संबंधित करना। (Linking the New Learning With the Past)
 3. शिक्षण में प्रभावशाली विधियों तथा सहायक साधनों का प्रयोग।
 4. उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का निश्चित होना।
 5. परिणाम एवं प्रगति का ज्ञान।
 6. प्रशंसा एवं आलोचना।
 7. पुरुस्कार एवं दण्ड।
 8. प्रतियोगिता एवं सहयोग।
 9. अहम भावना का उपयोग।(Ego-Involvement)
 10. उचित दृष्टिकोण का विकास
 11. सीखने की उत्पत्ति स्थिति और वातावरण।
- अभिप्रेरणा का शैक्षिक महत्व :-
 1. आदर्शों एवं मूल्यों का विकास।
 2. छात्रों का मार्गदर्शन।
 3. अधिगम का आधार –सॉरेंसन
 4. स्वस्थ आकांक्षाओं का विकास।
 5. अनुशासन का विकास।
 6. आवश्यकताओं की संतुष्टि।
 7. सीखने की इच्छा का विकास।
 8. प्रशंसा एवं निंदा का प्रयोग।
 9. व्यवहार में वांछित परिवर्तन हेतु।
 10. अधिगम का हृदय एवं अधिगम का स्वर्णपथ, अभिप्रेरणा है।

उपलब्धि प्रेरणा (Achievement Motivation)

- उपलब्धि प्रेरणा एक प्रकार का सामाजिक प्रेरक है।
- इस प्रेरणा का प्रतिपादन मूर्रे ने 1938 में किया। मूर्रे ने 20 आवश्यकताओं की जो सूची प्रस्तुत की, उनमें इस अभिप्रेरक को एक आवश्यकता के रूप में माना, परंतु 1950 के बाद इस अभिप्रेरक पर महत्वपूर्ण अध्ययन ही नहीं हुए, परंतु इस अभिप्रेरणा को अधिक महत्व मिला।
- मैकक्लीलैण्ड (1953) ने अनुसंधान कर इस प्रेरणा को महत्वपूर्ण अर्जित प्रेरणा के रूप में बताया। मैकक्लीलैण्ड ने बताया कि बालक को शुरू में ही जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है। उसकी उपलब्धि प्रेरणा भी उसी स्तर की होती है। उच्च उपलब्धि प्रेरणा वाले बालक उच्च उपलब्धि की आशा रखते हैं।
- उपलब्धि अभिप्रेरणा सिद्धांत मैकक्लीलैण्ड मनोविज्ञानी ने दिया।
- एटकिंसन (1964) ने बताया कि व्यक्ति में अनुभव के द्वारा दो प्रवृत्तियां अर्जित होती हैं। पहली है सफलता प्राप्त करने की प्रवृत्ति और दूसरी है असफलता से दूर रहने की प्रवृत्ति की प्रेरणा।
- ये दो प्रेरणाएं व्यक्ति की सफलता प्राप्त करने की प्रवृत्ति तीन बातों पर निर्भर करती है :-
 1. सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा (M_s)
 2. सफलता प्राप्त करने की संभावना (P_s)
 3. सफलता का प्रलोभन मूल्य (I_s)
 इसे निम्न समीकरण से व्यक्त किया जाता है :-

$$T_s = M_s \times P_s \times I_s$$

where

T_s = Strength of the motivation to get Success (सफलता प्राप्त करने की प्रवृत्ति)

M_s = Motive or need to Achieve Success (सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा)

P_s = Probability of Success (सफलता प्राप्त करने की संभावना)

I_s = Incentives value of success (सफलता का प्रलोभन मूल्य)

- इसी प्रकार असफलता के भय से कार्य नहीं करने की प्रवृत्ति भी तीन बातों पर निर्भर करती है :-
 1. असफलता का परिहार (दूर रहने की) करने की प्रेरणा (M_f)
 2. असफलता हो जाने की संभावना (P_f)
 3. असफलता से हाने वाली क्षति का मूल्य (I_f)
 इसे निम्न समीकरण से व्यक्त किया जाता है :-

$$T_f = M_f \times P_f \times I_f$$

where

T_f = Strength of the motivation to avoid failure (असफलता परिहार करने की प्रवृत्ति)

M_f = Motive or need to avoid Failure (असफलता का परिहार करने की प्रेरणा)

P_f = Probability of failure (असफलता होने की संभावना)

I_f = Incentives value of failure (असफलता से होने वाली क्षति की मात्रा)

इन दोनों प्रवृत्तियों का योग व्यक्ति को उपलब्धि व्यवहार करने या नहीं करने का निर्धारण करता है।

$T_s + T_f$

- यदि परिणाम धनात्मक होता है तो व्यक्ति का उपलब्धि प्रेरक से संबंधित कार्य निष्पादन अधिक होता है और यदि परिणाम ऋणात्मक होता है तो व्यक्ति किसी प्रकार का प्रयत्न ही नहीं करता है।
- एटकिसन एवं फ़ैदर ने बताया कि उपलब्धि प्रेरित व्यक्ति में सफलता प्राप्ति प्रवृत्ति तथा विफलता परिहार प्रवृत्ति देखी जा सकती है।
- हैकहाउन का कहना है कि उच्च उपलब्धि प्रेरित व्यक्ति कार्य को उत्तरदायित्व के साथ करता है।
- सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा का मापन **TAT** (प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण), **CIE** (उपलब्धि परीक्षण) तकनीक के द्वारा किया जाता है। इस तकनीक में चित्रों को दिखाकर प्रयोज्य से कहानी लिखवायी जाती है। प्रयोज्य चित्र के बारे में भूत, वर्तमान तथा भविष्य के बारे में कहानी लिखता है। असफलता का परिहार की प्रेरणा का मापन परीक्षण चिंता मापनी (Test Anxiety Scale) की सहायता से किया जाता है।
- हैकहाउसन – “उच्च उपलब्धि प्रेरित व्यक्ति कार्य को उत्तरदायित्व के साथ करते है।”
- भारतीय दर्शन में भौतिक पदार्थों की इस उपलब्धि को “रस्सी का सर्प” की भांति भ्रम मात्र बताया गया है।

● अभिप्रेरणा का संघर्ष के प्रकार :-

कुर्ट लेविन को नवगेस्टालवादी या आधुनिक गेस्टालवाद मनोवैज्ञानिक माना जाता है।

कुर्ट लेविन ने स्थान विज्ञान के आधार पर अपने सिद्धांत का प्रतिपादन किया। लेविन का मानना है कि स्थान विशेष का वातावरण ही वह तत्व है जो व्यक्ति को अपने अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। क्योंकि यदि व्यक्ति वातावरण के अनुरूप कार्य नहीं करेगा तो व्यक्ति का वातावरण में समायोजन नहीं होगा।

कुर्ट लेविन ने अपने सिद्धांत में चार प्रकार का संघर्ष या द्वंद बताया है :-

1. उपागम-उपागम संघर्ष (Approach-Approach) – दो सकारात्मक विचारों में
2. परिहार-परिहार संघर्ष (Avoidance-Avoidance)– दो नकारात्मक विचारों में
3. उपागम-परिहार संघर्ष (Approach-Avoidance)– एक सकारात्मक व एक नकारात्मक
4. बहु उपागम-परिहार संघर्ष (Multiple Approach-Avoidance Conflict) –बहुत से सकारात्मक व नकारात्मक

1. उपागम-उपागम संघर्ष (Approach-Approach) –इसमें व्यक्ति के पास दो सकारात्मक विकल्प होते हैं, जिसमें से व्यक्ति को किसी एक सर्वोत्तम सकारात्मक विकल्प का चयन करना पड़ता है।

जैसे – अध्यापक और पटवारी में से किसी एक पद पर नियुक्ति को प्राप्त करना।

2. परिहार-परिहार संघर्ष (Avoidance-Avoidance)– व्यक्ति के पास दोनों ही नकारात्मक विकल्प होते हैं। जिसमें से व्यक्ति को किसी एक कम नकारात्मक विकल्प का चयन करना होता है।

जैसे – एक तरफ कुआं और एक तरफ खाई।

3. उपागम-परिहार संघर्ष (Approach-Avoidance)– व्यक्ति के पास एक सकारात्मक और एक नकारात्मक विकल्प होता है। जिसमें से व्यक्ति को सकारात्मक विकल्प का चयन और नकारात्मक विकल्प का त्याग करना पड़ता है।

जैसे – फिल्म भी देखना और पैसे भी खर्च ना करना, पढाई भी नहीं करना और फेल भी नहीं होना।

4. बहु उपागम-परिहार संघर्ष (Multiple Approach-Avoidance Conflict) –व्यक्ति के पास दो सकारात्मक और दो नकारात्मक विकल्प होते हैं। जिसमें व्यक्ति एक सकारात्मक और एक नकारात्मक विकल्प का चयन करना होता है।

जैसे – रिश्त के आधार पर सरकारी अध्यापक के पद को प्राप्त करना।